Gokhale Memorial Girls' College

Date: 17/04/2023

To whom it may concern

Subject: Completion of Term Paper by HINA students of Semester VI in 2021-22

The undersigned hereby certifies that the students mentioned in the table given below have completed their Term Papers for the University of Calcutta B.A/B.Sc. Semester-VI Examination, 2022 in CC-13 course of Hindi Honours. These students are mentioned in the modified template of Metric 1.3.2 (for DVV compliance) as HINA (SEM VI) with pdf link of their projects stated alongside.

SL.NO.	REGISTRATION NO.	COLLEGE ROLL NO.	NAME	SUBJEC
1	013-1211-0009-19	19/BAH/0021	PIYA MONDAL	HINA
2	013-1211-0041-19	19/BAH/0008	SUSMITA SAHA	HINA
3	013-1211-0075-19	19/BAH/0224	PRIYANKA KANOO	HINA
4	013-1211-0092-19	19/BAH/0019	DIKSHA CHOWDHURY	HINA
5	013-1211-0095-19	19/BAH/0155	SWEETY PRASAD	HINA
6	013-1211-0102-19	19/BAH/0020	PRITI KUMARI JHA	HINA

Principal
Gokhale Memorial Girls' College

1/1 Harish Mukherjee Road, Kokata - 700 020
Phones : 2223-2355, 2223-8287, 2223-0027 • E-mail-gokhalecollegekolkata@gmail.com
website - www.gokhalecollegekolkata.edu.in

SESSION : 2021-2022

NAME – PIYA MONDAL

UNIVERSITY ROLL NO. - 192013-11-0077

UNIVERSITY REG. NO. - 013-1211-0009-19

COLLEGE ROLL NO -19/BAH/0021

SEMESTER – 6TH

विषय:

- *CC13 – प्रेमचंद और छायावाद युगीन पत्रकारिता*
- *CC14 - हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास*
- *DSE (B1) - तुलसीदास "गीतावली"*
- *DSE (B2) - प्रेमचंद "नमक का दारोगा"*

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

Authenticated.

Principal
Gokhale Memorial Girls' College

02 MAR 2023

विषय :-

प्रेमचंद और छायावादयुगीन पत्रकारिता

SEMESTER : 6th
PAPER : CC13

Gokhale Memorial Girls' College
Kolkata

Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College
02 MAR 2023

प्रेमचंद और छायावादयुगीन पत्रकारिता

30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगलकिशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले 'उदन्तमार्तण्ड' को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। इस ~~समय~~ समय गतिविधियों का क्योंकि कलकत्ता केन्द्र था। इसीलिए यहाँ पर सबसे महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएँ - उदन्त मार्तण्ड, बंगदूत, प्रजामित्र तथा समाचार सुधा वर्षण आदि का प्रकाशन हुआ।

साहित्य के इतिहास में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है। साहित्य की नई प्रवृत्तियाँ, उसमें होने वाले प्रयोग और नया दृष्टिकोण सर्वप्रथम साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से ही अभिव्यक्ति पाते हैं। छायावाद युग में साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में कई नाम उभरे। जैसे → सरस्वती, मर्यादा, स्त्री दर्पण आदि का प्रकाशन द्विवेदी युग से ही चला आ रहा था, तो दूसरी ओर चाँद, प्रभा, माधुरी, सुधा, विशाल भारत, हंस, आदि महत्वपूर्ण पत्रिकाओं ने इस युग को समृद्ध बनाया।

0 4 MAR 2023

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

Authenticated.

Principal
Gokhale Memorial Girls' College

छायावाद के कुछ पत्र-पत्रिकाएं इस प्रकार हैं :-

'मर्यादा' पत्रिका का पहला अंक नवम्बर सन् 1910 में कृष्णकांत मालवीय ने 'अभ्युदय' कार्यालय प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। बाद में बाबू संपूर्णानंद और कुछ समय के लिए मुंशी प्रेमचंद ने इसका संपादन किया। इसमें साहित्य, समाज शास्त्र, और राजनीतिक से संबंधित लेख ही नहीं बल्कि उच्च स्तर की कहानियाँ, कविताएं और उपन्यास भी प्रकाशित होते थे।

प्रयाग से प्रकाशित 'चाँद' एक प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका थी जिसका प्रकाशन सन् 1923 से हुआ। इसके संपादक रामरख सिंह सहगल, महादेवी वर्मा, नंद किशोर तिवारी रहे। इस पत्रिका में नारी जीवन से संबंधित चर्चा अधिक रहती थी।

'स्त्री-दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन जून 1909 में प्रयाग से शुरू हुआ था इसकी संपादिका रामेश्वरी देवी नेहरू और प्रबंधक कमला देवी नेहरू थी। इसमें स्त्री मुद्दों पर सामाजिक-राजनीतिक लेख छपते थे। साथ ही इस पत्रिका में महिलाओं की रचनाओं को प्राथमिकता दी जाती थी।

'समन्वय' का प्रकाशन 1922 ई. रामकृष्ण मिशन से के माधवानंद के संपादन में आरंभ हुआ बाद में निराला जी की नियुक्ति इसके संपादन विभाग में हुई। इस पत्रिका में प्रायः आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों की प्रधानता होने पर भी उच्चकोटि की साहित्यिक सामग्री प्रकाशित हुआ करती थी।

1923 ई. में कलकत्ता से 'मतवाला' निकला जिसके संपादक महादेव प्रसाद सेठ थे। इसके संपादन विभाग में शिवपूजन सहाय, नवजादिकलाल श्रीवास्तव और निराला ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'हंस' ~~बनारस~~ वाराणसी से 1930 ई. में प्रकाशित 'हंस' प्रेमचंद द्वारा संपादित तत्कालीन साहित्यिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया था। इसमें कथा साहित्य, उच्च कोटि की कविताएं, एकांकी, निबंध और आलोचनाएं प्रकाशित होती थी।

1925 ई. में प्रकाशित होनेवाली 'कल्याण' पत्रिका हिंदी जगत की सबसे लोकप्रिय मासिक पत्रिका के रूप में सामने आई।

आदि इस युग की अनेक पत्र - पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी जैसे → विशाल भारत, कल्याण, प्रभा आदि।

पत्रकार के रूप में प्रेमचंद :-

अध्यापकी के दौरान ही प्रेमचंद पत्रकारिता एवं साहित्य साधना का कार्य आरंभ कर दिया था। सन् 1905 में 'जमाना' में भेजे लेख से उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत की थी। 'जमाना' उर्दू पत्र था। जल्द ही प्रेमचंद ने हिंदी की ओर रुख किया। सन् 1930 के दौरान वे 'माधुरी' का संपादन करते थे। 'माधुरी' के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा की अपूर्व सेवा की।

ऐसे वक्त में प्रेमचंद को ~~र~~ ऐसी पत्रिका की आवश्यकता महसूस हुई जो राष्ट्रवादी आंदोलनों के विचारों का प्रतिनिधित्व एवं जनमत निर्माण कर सके। सन् 1930 में अवज्ञा आंदोलन के दौरान ही उन्होंने 'हंस' का प्रकाशन प्रारंभ किया।

प्रेमचंद ने साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी की अपूर्ण सेवा की। वे अपने लेखन के लिए क्या मिलेगा इसकी परवाह न करते थे। लिखना उनका धर्म था, शब्दों के वे पुजारी थे। यही कारण था कि उन्होंने धन के लिए लिखा ही नहीं। हालांकि हिंदी लेखकों की आर्थिक समस्याएं इन्हे बहुत अधिक कचोटती थी, किंतु वे पैसे न मिले इसलिए लेखन न हो इसे उचित नहीं समझते थे।

हिंदी लेखकों की आर्थिक कठिनाई के विषय में उन्होंने कहा -

'हिंदी से आज हमें न पैसे मिलते हैं, न यश मिलता है। दोनों ही नहीं। इस संसार में लेखक को चाहिए किसी की कामना किए बिना लिखता रहे है।'

प्रेमचंद का पत्रकारिता में योगदान :-

मुंशी प्रेमचंद को हिंदी पत्रकारिता जगत उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए सदैव याद रखेगा। 'सोजे वतन' में उनके लेखन के कारण पत्रिका जप्त और कलेक्टर के सामने पेश के बाद 'नवाब राय' 'प्रेमचंद' के नाम से लिखने पर बाध्य हुए। प्रेमचंद नाम उन्हें 'सोजे वतन' के मालिक दयाराम निगम के द्वारा दिया गया था। प्रेमचंद 'जमाना' नामक उर्दू मासिक पत्र के अलावा इलाहाबाद की एक उर्दू पत्रिका '[illegible]' भी लिखते थे। 16 फरवरी 1921 को सरकारी सेवा से इस्तिफा देकर प्रेमचंद पूर्णभाव से पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गए। अंग्रेजी शासन के दमनकारी नीति, किसानो और मजदूरों के शोषण, धार्मिक पाखण्ड, साम्प्रदायिकता के विरुद्ध प्रेमचंद को अपना प्रकाशन और अपनी पत्रिका की अवश्यकता महसूस होने लगी। इसी दौरान वे 'माधुरी' पत्रिका के संपादन से जुड़े जहाँ वे 1927-1931 तक काम किया।

वे एक निर्भिक और निष्पक्ष पत्रकार थे। उनके लिए पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वाधीनता थी। उन्होंने पत्रकारिता को समाज से जुड़ने का रास्ता बनाया था। उनके लिए पत्रकारिता आजादी के लड़ाई का एक अंश था।

संपादक के रूप में प्रेमचंद :-

संपादक के रूप में प्रेमचंद प्रतिकूलताओं के बीच खड़े होकर भी अपने धवल चरित्र व ऊंचे मनोबल से अंग्रेजी साम्राज्यवाद का जमकर प्रतिरोध करते थे। मुंशी जी एक तरफ पाठकों को ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ महात्मा गांधी के आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित करते है तो दूसरी तरफ अंग्रेजी शासन के नृशंसता का तीव्र प्रतिवाद भी करते है। इसलिए 'जागरण' व 'हंस' को ~~कई~~ कई बार ब्रिटिश शासन का कोपभाजन बनना पड़ा। 'जागरण' के 12 दिसंबर 1932 के अंक में प्रेमचंद ने स्वयं इस कोप का ब्योरा दिया है। हंस की जमानत से हाल ही में गला छूटा। पांच महीनों तक पत्र बंद रहा।

प्रेमचंद लिखते है कि -

'ऐसे वातावरण में जब कि हर संपादक के सिर पर तलवार लटक रही हो, राष्ट्र का सच्चा राजनीतिक विकास नहीं हो सकता।'

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने पत्रकारिता को मिशन के रूप मे लिया। वे पत्रकारिता मे पूँजी के प्रभुत्व के खिलाफ थे। पत्रकारिता मे विज्ञापनों को बुनियादी सिद्धांतों व सवालों के हिमायती थे।

उनकी पत्रकारिता आज भी पत्रकारों के लिए महत्वपूर्ण है जो सिद्धान्तों के लिए लड़ना सिखाती है। जन-समुदाय का कल्याण करना चाहती है। जो बेजुबान की जुबान बनकर बोलना जानती है। पत्रकारिता के क्षेत्र मे प्रेमचंद का योगदान अद्वितीय है।

ग्रंथसूची

इस परियोजना कार्य को करने के लिए मैंने निम्नलिखित वेबसाइटों की साहयता ली है :-

- http://mnbhardwaj.blogspot.com
- http://hi.m.wikipedia.org
- http://bharatdiscovery.org
- copy.

K.Kam
8.7.22

13/15

SESSION : 2021-2022

NAME - SUSMITA SAHA

UNIVERSITY ROLL NO. - 192013-11-0078

UNIVERSITY REG. NO. - 013-1211-0041-19

COLLEGE ROLL NO -19/BAH/0008

SEMESTER – 6TH

विषय:

- **CC13 - साहित्यिक पत्रिका: अर्थ, महत्व और अवधारणा**
- **CC14 - हिन्दी का मानकीकरण**
- **DSE (B1) - तुलसीदास "विनय पत्रिका"**
- **DSE (B2) - प्रेमचंद "गबन"**

Kolkata

Authenticated.

Principal
Gokhale Memorial Girls' College

आभार

मैं अपनी शिक्षिका K.K Mam, RP Mam को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे इन विषयों पर परियोजना बनाने का अवसर प्रदान किया, साथ ही मेरी सहायता भी की। जहाँ मुझे कठिनाई का सामना करना पड़ा।

मैं अपने कुछ सहपाठी (प्रिया, दिशा तथा प्रीति) को भी अपना आभार देना चाहूँगी, जिन्होंने मेरी मदद की।

साथ ही मेरे माता-पिता, एवं बहन का जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया।

धन्यवाद! ̈‿

दैनिक जागरण

चाँद

प्रभा

३० मई १८२६

उदन्त मार्तण्ड

देश

माधुरी

सरस्वती

साहित्यिक पत्रकारिता

अर्थ, महत्व और अवधारणा

[illegible]

आज

नवजीवन

नवभारत टाइम्स

सामदण्ड मार्तण्ड

जागरण

आज

SEMESTER : 6th
PAPER : CC13

प्रताप

विशाल भारत

हंस

कर्मवीर

समन्वय

मतवाला

हिंदी प्रदीप

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	पत्रकारिता भूमिका	01
2.	साहित्यिक पत्रकारिता का अर्थ	02
3.	आलोचकों का मत	03
4.	महत्व	04-06
5.	अवधारणा	07
6.	निष्कर्ष	08
7.	ग्रंथ सूची	09

भूमिका (पत्रकारिता) :-

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है, जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, जानकारी एकत्रित करके पहुँचाना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित है। आज के युग में पत्रकारिता के भी अनेक माध्यम हो गए हैं, जैसे- अखबार, पत्रिकाएँ, रेडियो, दूरदर्शन, वेब-पत्रकारिता आदि।

पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विविध हो चुका है। चाहे वह राजनीति हो या न्यायालय या कार्यालय, विज्ञान हो या प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, साहित्य हो या खेल या समाज, पर्यावरण हो या अंतरिक्ष या खोज। इन सभी क्षेत्रों में पत्रकारिता की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही महसूस किया जा सकता है।

Kolkata

साहित्यिक पत्रकारिता का अर्थ :-

- मनुष्य को महत् भावों की ओर अग्रसर करने लिए ही साहित्य की सृष्टि होती है।
- साहित्य में, हृदय का इतिहास व्याप्त रहता है।
- साहित्य का संबंध ही मनुष्य के हृदय अथवा अन्तर्जगत से है, वह अंतर्भावनाओं का, बाह्य स्वरूप है।
- साहित्य के अन्तर्गत वह सारा व्यंग्य लिखा जा सकता है, जिसमें अर्थबोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरञ्जन हो।

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत, भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिका, कविवचन सुधा के 15 अगस्त, 1867 ई० से बनारस से प्रकाशन के साथ होती है। भारतेंदु न केवल आरंभकर्ता थे, बल्कि उन्होंने अपनी नेतृत्वकारी प्रतिभा से साहित्य और पत्रकारिता के बिखरे हुए सारे सूत्रों को समेट कर एक नव युग का सूत्रपात किया। भारतेंदु की साहित्यिक पत्रकारिता से ही हिंदी साहित्य

नई - से - नई गद्य विधाओं की शुरुआत हुई।

आलोचकों का मत :

"पत्रकारिता का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों का निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।"

— महात्मा गांधी

"पत्रकारिता एक रचनात्मक विधा है इसके बिना समाज को बदलना असंभव है अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उनके पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।"

— महादेवी वर्मा

"हिंदी दैनिकों ने जहाँ देश को उद्बुद्ध करने में अथक प्रयास किया है, वहीं जनता में साहित्यिक चेतना को जगाने का भी प्रयास किया है।"

— शिवपूजन सहाय

साहित्यिक पत्रकारिता का महत्व :-

पत्रकारिता में, लोग, देशकाल तथा समाज के बारे में विस्तार से बताया जाता है। पत्रकारिता लोकनायक की तरह होता है। पराधीन भारत में, साहित्यिक पत्रकारिता ने एक अहं भूमिका निभाई है। साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीयता, जातीय संस्कृति, भाषा और साहित्य के विकास का मार्ग प्रसस्त करती है। साहित्यिक पत्रकारिता का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर देखा जा सकता है।-

- राष्ट्रीय चेतना : पराधीन भारत में, हिंदी पत्रकारिता का यह सौभाग्य रहा है कि समय और समाज के प्रति जागरूक पत्रकारों ने निश्चित लक्ष्य के लिए इससे अपने को जोड़ा। वे लक्ष्य थे, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक उत्थान और लोकजागरण। पत्रकारिता एक मिशन थी; राष्ट्रीय महत्व उसका उद्देश्य। हिंदी के कुछ ऐसे साहित्यिक पत्रकारिता जो जनमानस को प्रेरित किया, अपने देश के प्रति प्रेम एवं निष्ठा जगाया। वे है - भारत मित्र, पंजाब, केसरी, मराठा, हिंदी, प्रदीप आदि।

• साहित्य के विकास का साधन:

साहित्यिक पत्रकारिता के कारण ही हिंदी के साहित्य का विकास विस्तार रूप से हुआ है।

• साहित्यिक पत्रकारिता, घर-घर, जन-जन तक पहुँचाती है: पाठकों की आर्थिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए, साहित्यिक पत्रकारिता के मूल्य कम होते थे ताकि वे घर-घर के लोग तक पहुँच सके और वे पढ़ सके। एक पत्रकारिता में लोगों को हर प्रकार की विधाएँ मिल जाती है, जैसे - कविताएँ ग़ज़ल, लघु नाटक, गीत, उपन्यास के अंक, कहानियां आदि आते है।

• साहित्यिक पत्रकारिता पाठक और साहित्य के बीच का सेतु है: साहित्यकार देश के किसी भी कोने से साहित्य की रचना करता है, और पाठक किसी अन्य देश की जगह से, पत्रकारिता के माध्यम से उस साहित्यकार की प्रस्तुति को ग्रहण कर सकता है। देश-विदेश में हर जगह साहित्यिक पत्रकारिता का प्रचार-प्रसार होता है।

- **साहित्य के स्तर को बनाए रखती है:**

लेखक को समझना चाहिए की किस प्रकार का साहित्य उन्हें लिखना चाहिए, कितना उत्तम होना चाहिए, साहित्य का स्तर, किसान विमर्श, महिला विमर्श इत्यादि पत्रिकाएँ के माध्यम से ही लोगों तक पहुँचता है।

- **साहित्यिक पत्रकारिताएं लोगों को प्रेरित करती है:** साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से नए लेखक भी उभरकर आते है।

✓

Gokhale Memorial Girls' College
Kolkata

साहित्यिक पत्रकारिता की अवधारणा :-

आजकल साहित्यिक पत्रिकाओं को चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता बाज़ार की दृष्टि से, क्योंकि बाज़ार में नए-नए साहित्यिक पत्रिकाएँ आ रही है, पाठकों के समक्ष अनेक विकल्प रहते है। मूल्य की दृष्टि से साहित्यिक पत्रकारिता, आर्थिक लाभ भी कभी-कभी नहीं उठा पाता है। प्रिंटिंग प्रक्रिया में भी अनेक पैसे चले जाते है, जिस कारणवश भी आर्थिक लाभ नहीं हो पाता। पाठकों की संख्या भी अब कम हो रही है क्योंकि अब आज जनसंचार माध्यम जैसे टेलिविजन एवं इंटरनेट से अनेक पाठक जुड़ रहे है।

आज के इस नए युग में, बहुत कुछ नया भी आ रहा है। पाठक अब ई-पत्रिकाएँ का लाभ उठा सकते है, एवं ई-जर्नल्स भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो जाता है। जिस कारण इसका प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है, एवं मूल्य कम है।

निष्कर्ष

स्वतंत्र से पूर्व की पत्रकारिताएँ, लोगों के अपने देश के प्रति प्रेम, एवं जागरूक करने में सफल रही है, कुछ महत्वपूर्ण पत्रकारिताओं का नाम निम्नलिखित रूप से हैं :-

भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता : उदन्त मार्तण्ड, हरिश्चन्द्र मैगजीन, बाला बोधिनी आदि।

द्विवेदी युगीन पत्रकारिता : विश्वामित्र, भारतमित्र, मतवाला, कर्मवीर आदि

ऐसे अनेक युगों की अनेक पत्रकारिताओं के माध्यम से नारी जागरण, समाज का कल्याण, आदि हुए। आज के पत्रकारिताओं के माध्यम से भी पाठक वर्ग जागरूक होते हैं।

SESSION – 2021-2022

NAME- PRIYANKA KANOO

UNIVERSITY ROLL. NO- 192013-11-0079

UNIVERSITY REGISTRATION NO – 013-1211-0075-19

COLLEGE ROLL NO – 19/BAH/0224

SEMESTER - 6

विषय:

- *CC13 - साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका*
- *CC14 – संचार माध्यम*
- *DSE- A-2 – "कवितावली" (तुलसीदास)*
- *DSE -B-2- "कफन" (मुंशी प्रेमचंद)*

Authenticated
Principal
...hale Memorial Girls' College
05 JAN 2023

University Registration No :

013-1211-0075-19

University Roll. No :

192013-11-0079

Paper : CC13 (HINA)

Topic : साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका।

अनुक्रमणिका

क्र. संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या	हस्ताक्षर
1.	साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका	1-2	
2.	पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ	2-5	
3.	पत्रकारिता और अनुवाद: परस्पर संबंध	5-6	
4.	पत्रकारिता में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व	6-8	
5.	निष्कर्ष	8-9	
6.	ग्रन्थ सूची	9	

साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका

सामान्य तौर पर अनुवाद को पत्रकारिता से अलग और साहित्य से एक विशिष्ट विधा माना जाता है, जो कि काफी हद तक सही भी है। हालांकि हिन्दी पत्रकारिता में अनुवाद कार्य एक आवश्यक अंग के रूप में शामिल हो चुका है, और ऐसे में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाई पत्रकारों के लिए अनुवाद कार्य में निपुणता काफी हद तक आवश्यक हो चुकी है। भारतीय भाषाई पत्रकारों के लिए अनुवाद कार्य में दक्षता एक विशिष्ट योग्यता तो हर हाल में है ही।

अनुवाद कार्य के लिए यह तो सामान्य तौर पर यह माना ही जाता है तो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा, दोनों में अनुवादक का पूरा अधिकार होना चाहिए। व्यवहारिक रूप से अनुवादक का दोनों भाषाओं में अधिकार होना चाहिए।

साहित्यिक कृतियों का अनुवाद, सामान्य अनुवाद से कठिन होता है। साहित्यिक अनुवादक को भावनाओं, सांस्कृतिक - बारीकियों, स्वभाव और अन्य सूक्ष्म तत्वों का अनुवाद करने में भी सक्षम होना चाहिए। दो संस्कृतियों के बीच अनुवाद रूपी पुल के निर्माण में साहित्यिक अनुवाद का योगदान सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसका कारण यह है कि किसी भौगोलिक क्षेत्र का साहित्य उस क्षेत्र की संस्कृति, कला और रीतियों का प्रतिबिम्ब है।

कहा भी जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। बस यही वह विशेषता है जो साहित्य के अनुवाद को कठिन बना देता है। किसी भी एक साहित्यिक कृति का अनुवाद करते समय बहुत सावधानियां सांस्कृतिक है। भिन्नताओं के कारण समस्या का रूप ले लेता है। और मूल रचना की भाषा में व्यक्त स्थितियों, भावों, और विशेषताओं को सही ढंग से लक्ष्य भाषा में व्यक्त होता है, और साथ ही यह ख्याल रखना होता है कि अनूदित रचना पाठक को सहज और आत्मीय लगे। जब हम साहित्यिक अनुवाद की बात करते हैं तो हमारा आशय था पत्रकारिता के सभी विधाओं कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, कविता आदि के अनुवाद से होता है।

पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ

पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद प्रत्येक समय आवश्यकता होती है। किन्तु यह विडंबना ही है कि हमारे हिन्दी अनुवादकों के पास अनुवाद के लिए अधिक समय नहीं होता, उन्हें दी गई सामग्री का कैसे अनुवाद और प्रकाशन करना होता है। यह आवश्यक नहीं की अनुवादक को हर विषय का पूर्ण जानकारी हो। इसी प्रकार यह भी संभव है कि कभी-कभी कथ्य का संपूर्णता अंतर न हो सके, क्योंकि प्रत्येक भाषा का पाठक वर्ग तथा सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक संदर्भ

अलग ही होते हैं। इस अनुवादकों के सामने कई समस्या सफल पत्रकारिता के लिए बाधाएँ बनती है जिसमें प्रमुख है।

• <u>भाषा की समस्या</u> - पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद करते समय सबसे पहले भाषा संरचना की समस्या देखने को मिलते हैं। भाषा के संदर्भ में दो-तीन प्रश्न हमारे सामने उठते हैं :- एक पत्रकारिता की भाषा स्वरूप क्या है? क्या पत्रकारिता की भाषा स्वरूप विशिष्ट है? हाँ, अवश्य पर विज्ञान और आयुर्विज्ञान की भाषा के समान न तकनीकि है और न तो अधिक साहित्यिक ही है और न ही सामान्य बोलचाल की भाषा। इसे हम किसी सीमा तक लिखित और औपचारिक भाषा के समकक्ष तथा निश्चित प्रयोजनमूलक स्तर पर संबंध भाषा मान सकते हैं। प्राय: पत्र की भाषा में लोक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का प्राचुर्य रहता है। पत्रकारिता की भाषा में सर्वजन सुबोधता तथा प्रयोगधर्मिता का गुण आवश्यक है।

• <u>मुहावरें, शैली, लाक्षणिक पदबंधों की समस्या</u> -
प्राय: अनुवादक अंग्रेजी मुहावरों, शैली, लाक्षणिक, ~~प्राय: अनुवादक~~ पदबंधों आदि के समान्तर हिन्दी में मुहावरे आदि नहीं ढूंढते, शाब्दिक भ्रष्ट अनुवाद करने के कारण एक अस्वभाविकता का भाव बना रहा।

उदाहरण -

1. Put him behind the bars.
→ इसे जेल के सींखचों के पीछे बंद किया जाए।

2. We were stunned with astonishment.
→ हम आश्चर्य से स्तब्ध रहे।

उपर्युक्त उदाहरणों में हिन्दी की स्वाभाविक प्रवृत्ति का हनन करते हुए अंग्रेजी का शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

• शैली की समस्या -
समाचार पत्रों में विषय के अनुसार समाचारों की पृथक शैलियां होना स्वाभाविक है जैसे कि अंग्रेजी पत्रों में होता ही है। किन्तु भारतीय भाषाओं के पत्रों का पाठक विषय के अनुसार भाषा की गूढ़ता को प्रायः अस्वीकार करके सरल भाषा को ही स्वीकार करता है। अतः पत्रकारों को गूढ़-से-गूढ़ विषय के समाचार फीचर आदि भी सरलतम भाषा में अनूदित करना पड़ता है। यह कुछ वैसा ही हो जाता है, जैसे- 8-10 साल के बच्चे को उसकी भाषा में न्यूक्लियर विखंडन की पूर्ण प्रक्रिया समझाना पड़ता। अतः सरल शैली की समस्या भी अनुवाद की एक प्रमुख समस्या बन जाती है।

• शीर्षक – उपशीर्षकों आदि की समस्या

शीर्षकों के अनुवाद में कई तरह की बाधाएँ हैं। जैसे शीर्षक में इसके लिए पृष्ठ पर रखी गई जगह के अनुसार शब्दों की संख्या का चयन करना पड़ता है। शीर्षक का रोचक या आकर्षक होना तथा विषय की प्रतीति कराने वाला होना आवश्यक है। अतएव शीर्षक के मामले में शब्दानुवाद या भावानुवाद से भी काम नहीं चलता, बल्कि उनका छायानुवाद का या पुनः सृजन ही करना पड़ता है।

पत्रकारिता और अनुवाद : परस्पर संबंध

पत्रकारिता और अनुवाद का संबंध घनिष्ठ है, क्योंकि क्योंकि देश दुनिया की खबरों के लिए पत्रकार को अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। इसका कारण देश-दुनिया कि भाषाएँ अलग-अलग है। हम सब यह जानते हैं कि, "पत्रकारिता का पहला उद्देश्य है पाठकों को उनके चारों ओर घट रही घटनाओं, पनप रही प्रवृत्तियों, हो रहे शोधकार्यों, वैज्ञानिक प्रगति और आसन्न खतरों से अवगत कराना है। इसी के साथ घटनाओं, प्रवृत्तियों और मानव को प्रभावित करने वाले मुद्दों का अर्थ बताना भी उसका कर्तव्य है। संक्षेप में, जो जानने योग्य है उसे प्रस्तुत करना उसका लक्ष्य है।"

उपर्युक्त सभी चीजों से अवगत कराने के लिए पत्रकार को अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि वैज्ञानिक प्रगति तथा शोधकार्य पढ़ते हैं, जैसे विषयों की जानकारी अंग्रेजी या अन्य-अन्य भाषाओं की उपलब्ध होती रहती है।

साहित्य के माध्यम से, तकनीक, विज्ञान आदि सबके माध्यम से समाज को प्रभावित करना एवं उनमें आत्म विश्वास जगाना ही पत्रकारिता का मूल उद्देश्य है और इसे जन-जन की भाषाओं में उपलब्ध करने का कार्य अनुवाद करता है।

पत्रकारिता में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व

भूमंडलीकरण जैसी आधुनिक अवधारणाओं के प्रभाव के चलते पत्रकारिता का क्षेत्र अधिकाधिक व्यापक होता गया है। यानी दुनिया छोटी होती गई और उसे बेहतर जानने की जरूरत बढ़ती गई है। अनुवाद अब इस प्रक्रिया का अनिवार्य औज़ार है। दुनिया भर से प्राप्त हो रही प्रचुर सूचनाओं के सर्व संवर्द्धन, संग्रहण और सम्पादन के लिए भाषाओं के बीच पुल का होना अनुवाद से ही संभव है। अनुवाद पत्रकारिता का एक प्रमुख अंग बन गया है। अंग्रेजी को आज प्रमुख अंतराष्ट्रीय सम्पर्क भाषा का दर्जा प्राप्त है और इंटरनेट सूचनाओं समाचारों के

त्वरित अंतरण का प्रमुख माध्यम है, इसलिए जरूरी होता जा रहा है कि हिन्दी समाचार कक्ष के डेस्क पर भी कार्य करने वाला कर्मी न सिर्फ अंग्रेजी के कार्यव्यवहार से परिचित हो बल्कि वह प्राप्त सामग्री का एक त्वरित एवं तथ्यपूर्ण अनुवाद भी करे जिससे तत्सम्बन्धी समाचार दिया जा सके। पत्रकारिता के अंतराष्ट्रीय राजनीति, तकनीक आदि कई पक्ष होते हैं, जिनके समाचार निर्माण में इस तरह के अनुवाद की आवश्यकता होती है।

अतः पत्रकारिता में एक उज्ज्वल भविष्य के लिए पत्रकार का अनुवाद में कुशल होना मौजूदा परिस्थितियों में अब अनिवार्य हो चला है। आजकल प्रमुख हिन्दी अखबारों में इन्फार्मेशन, टेक्नोलोजी, नेट और विदेशों से जुड़ी मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सामग्री देखने को मिलती है। अनुवाद में पत्रकार के लिए इस काम में बहुत सुविधा होती है कि वो अंग्रेजी में उपलब्ध इस तरह की सामग्री को तत्काल अनुवाद कर सकता है। इस तरह वह अखबार में अपना महत्व और उपयोगिता बढ़ा सकता है।

अनुवाद में दक्षता से वह अंग्रेजी पत्रिकाओं, इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री, पुस्तकों के जरिए अपना ज्ञान और समझ भी विकसित कर सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ~~पत्र~~ पत्रकारिता के लिए अनुवाद का

महत्व का लगातार बढ़ता जा रहा है। समाचार एजेंसियों द्वारा हिन्दी में पर्याप्त समाचार उपलब्ध कराने के बाद भी अच्छे अनुवादों के जरिए कोई भी अख़बार अपना स्तर और छवि दूसरों से बेहतर बना सकता है।

निष्कर्ष

पत्रकारिता और अनुवाद का संबंध घनिष्ठ है, क्योंकि देश-दुनिया की खबरों के लिए पत्रकारों अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद प्रत्येक समय आवश्यक होती है — पाठक की भाषा विश्लेषक की, विषय विशेषज्ञ की और द्विभाषी की। प्रत्येक भाषा की नीति संरचना होती है, अनुवादक इन सबका विशेष ध्यान रखना होता है। अनुवादक ही अनुवाद कार्य की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

पत्रकारिता में विभिन्न क्षेत्र होते हैं — साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला, तकनीक, विज्ञान आदि हर क्षेत्रों में आज अनुवाद होता है। और हर भाषा में होता है। इन सबके माध्यम से आज दुनिया भर के लोग अपनी-अपनी भाषा में पत्र पढ़ते हैं।

अतः पत्रकारिता और अनुवाद के माध्यम से आज आधुनिक समय में लोगों में ज्ञान, मनोरंजन और जागरूकता लाने में यह हर दृष्टि से सम्पूर्ण है।

ग्रन्थ - सूची

इंटरनेट के निम्नलिखित वेबसाइट एवं लिंक जिसकी सहायता से मेरी परियोजना सफल हो पायी है :-

- http://www.lokmanch.in/?p=1822
- http://www.scotbuzz.org/2017/12
- samvadsetupatrika.wordpress.com.

K.Kane
8.7.22

12/15

NAME- DIKSHA CHOWDHURY

UNIVERSITY ROLL.NO- 192013-11-0080

UNIVERSITY REGISTRATION NO-013-1211-0092-19

COLLEGE ROLL.NO- 19\BAH\0019

SEMESTER-6TH

SUBJECT- HINDI

Authentic ited .
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

विषय

CC13 : भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता

CC14 : हिंदी की शैलिया

DSE A2 : तुलसीदास “कवितावलि”

DSE B2 : प्रेमचंद “गोदान”

Gokhale Memorial Girls' College Kolkata

विषय :-

भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता

SEMESTER : 6^{th}

PAPER: CC13

Kolkata

अनुक्रमणिका

क्र. संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या	हस्ताक्षर
१.	भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता	01-04	
२.	भारतेन्दु की महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएं	05-06	
३.	भारतेन्दु पत्रकारिता का महत्व	07-09	
४.	भारतेन्दु युगीन पत्रिकाओं का हिन्दी साहित्य में योगदान	10-11	
5.	निष्कर्ष	12	
6.	ग्रन्थसूची	13	

Memorial Girls
Kolkata

भारतेन्दुयुगीन पत्रकारिता

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित इसलिए विदेशी सरकार की दमन नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। 19वीं शताब्दी में हिन्दी गद्य-निर्माण की चेष्टा और हिन्दी-प्रचार आन्दोलन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था। इसका साक्ष्य 'भारतमित्र' (सन् 1878 ई. में) 'सारसुधानिधि' (सन् 1879 ई०) और 'उचित वक्ता' (सन् 1880 ई.) के जीर्ण पृष्ठों पर मुखर है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का पदार्पण हिन्दी पत्रकारिता की एक युगांतकारी घटना थी। उनके आगमन से हिन्दी पत्रकारिता को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके असाधारण योगदान को देखते हुए हिन्दी पत्रकारिता के 1867 से लेकर 1900 तक के कालखंड को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है। इस काल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका, आधुनिक हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता का संपादन किया, हालांकि लेखकों व संपादकों

का ऐसा समूह भी तैयार किया जिसने हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने के साथ साथ राष्ट्रीय चेतना जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समूह को भारतेन्दु मण्डल के नाम से जाना जाता है।

भारतेन्दु के समय देश में नवीन राजनीतिक सामाजिक चेतना का उदय प्रारम्भ हो गया था। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों तथा लेखों पर जन सामान्य अपनी व्यक्त विचारों से उद्वेलित भी होने लगी। भारतेन्दु के बारे में हिन्दी साहित्य कोश में लिखा है — भारतेन्दु हरिश्चंद्र नवयुग के अग्रदूत और हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता थे। उनकी रचनाएं देशप्रेम से ओतप्रोत हैं। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की सर्वतोमुखी अधोगति का हृदयविदारक चित्र अंकित किया और उसके भावी उज्जवल भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न देखा।

भारतेन्दु और अन्य पत्रकारों ने संपूर्ण भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता को पहचानते हुए सांस्कृतिक पुनरुत्थान को पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। इस कारण तत्कालीन पत्रकारों ने साहित्यकार, संपादक, विचारक, समाज सुधारक और क्रांतिकारी आदि बहुमुखी दायित्वों का निर्वहन किया। सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जगाने के साथ साथ ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरोध को

दोहरी भूमिका उन्होंने अत्यंत कुशलता से निभाई।

भारतेन्दु युग :

हिन्दी पत्रकारिता का दूसरा युग 1873 से 1900 तक चलता है। इस युग के एक छोर पर भारतेन्दु का "हरिश्चंद्र मैगजीन" था और नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदनप्राप्त 'सरस्वती'। इन 27 वर्षों में प्रकाशित पत्रों की संख्या 300-350 से ऊपर है और ये नागपुर तक फैले हुए। अधिकांश पत्र मासिक या साप्ताहिक थे। मासिक पत्रों में निबंध, नवल कथा (उपन्यास), वार्ता आदि के रूप में कुछ अधिक स्थायी संपत्ति रहती है, परन्तु अधिकांश पत्र 10-15 पृष्ठों से अधिक नहीं जाते थे और उन्हें हम आज के शब्दों में 'विचारपत्र' ही कह सकते हैं। साप्ताहिक पत्रों में समाचारों और उनपर टिप्पणियों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। वास्तव में दैनिक समाचार के प्रति उस समय विशेष आग्रह नहीं था और कदाचित इसीलिए उन दिनों साप्ताहिक और मासिक पत्र कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। उन्होंने जनसाधारण में अत्यंत महत्वपूर्ण भाग लिया था।

भारतेन्दु युग का महत्व हम अलग-अलग क्षेत्र में देख सकते हैं — उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि जैसे क्षेत्रों में।

उपन्यास—

भारतेन्दु काल में हिन्दी की इस विधा का विकास हुआ। पंडित बालकृष्ण भट्ट का 'सौ अजान एक सुजान' इस समय का उपदेश-प्रधान आदर्शवादी उपन्यास है। इसमें इस परिपाटी श्यामा-स्वप्न उपन्यास काव्य-सौन्दर्य से भरा हुआ है। अम्बिकादत्त व्यास का 'आश्चर्य वृत्तान्त', बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' और राधाकृष्णदास का 'निःसहाय हिन्दू' इस काल के अन्य उपन्यास हैं।

कहानी—

कहानी का क्रमबद्ध विकास भारतेन्दु युग से होता है। इस युग में केवल बंगला तथा अंग्रेजी कहानियों के अनुवाद हुए। मौलिक रूप में जो कहानियां लिखी गई, उन पर इनका प्रभाव दिखाई देता है। भारतेन्दु जी ने एक 'अद्भुत अपूर्व स्वप्न' नामक कहानी लिखी, जिसे अधिकांश विद्वान हिन्दी की प्रथम साहित्यिक तथा मौलिक कहानी मानते हैं।

नाटक—

इस युग में मौलिक तथा अनूदित दोनों ही प्रकार के नाटक लिखे गए। भारतेन्दु के मौलिक नाटकों में 'चंद्रावली', 'नीलदेवी', 'भारत-दुर्दशा' प्रमुख हैं। अनूदित नाटकों में कुछ बंगला से और कुछ संस्कृत से अनूदित हैं। इस काल में प्रतापनारायण मिश्र ने 'सौ संकट', 'कलि प्रभाव', 'ज्वारी ख्वारी', हमीर-हठ, राधाकृष्णदास ने 'महारानी पद्मावती', 'महाराणा प्रताप' आदि नाटक लिखे। बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास आदि इस काल के अन्य नाटककार हैं।

भारतेन्दु की महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएं

हिन्दी के पत्र पत्रिकाओं के विकास की गति भारतेन्दु युग में सबसे ज्यादा रही भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्यिक पत्रिका 'कवि वचन सुधा' को 1867 में प्रवर्तित किया तथा तब से हिन्दी की पत्रिकाएं तेजी से प्रकाशित होने लगी।

कविवचन सुधा :

कविवचनसुधा भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा सम्पादित एक हिन्दी समाचारपत्र था। इसका प्रकाशन 15 अगस्त 1867 को वाराणसी में आरंभ हुआ जो एक क्रांतिकारी घटना थी। कविवचनसुधा में साहित्य तो छपता था, उसके अलावा समाचार, यात्रा, ज्ञान-विज्ञान, लेख भी प्रकाशित होते हैं। इसकी पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ती गई। लोकप्रिय होने कि उसे मासिक से पाक्षिक और फिर साप्ताहिक कर दिया गया। प्रकाशन के दूसरे वर्ष यह पत्रिका पाक्षिक हो गई, और 5 सितम्बर, 1873 से साप्ताहिक। पत्रिका के प्रवेशांक में भारतेन्दु ने अपने आदर्श की घोषणा इस प्रकार की थी —

"खल जनन सों सज्जन दुखी मति होंहि, हरिपद मति रहै।
अपधर्म छूटै, स्वत्व निज भारत गहै, कर दुख बहै।।
बुध तजहि मत्सर, नारि नर सम होंहि, जग आनंद लहै।
तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतबानी सब कहै।।

कविवचनसुधा के द्वितीय प्रकाशन वर्ष में मस्टहेड के ठीक नीचे निम्नलिखित पद छपता था —

"निज-मित नव यह कवि वचन सुधा सकल रस खानि।
पीवहुं रसिक आनंद भरि परमलाभ जिय जानि।।
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहि तुम्हरे जोग।
तासों आदर देहु अरु पीवहु एहि बुध लोग।।"

हरिश्चंद्र मैगजिन :

'हरिश्चंद्र मैगजिन' एक मासिक पत्रिका थी। यह पत्रिका 15 अक्टूबर 1873 को काशी से भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने प्रारम्भ की थी। इस पत्रिका मे पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ और व्यंग्य आदि प्रकाशित हुआ करते थे। जिस समय पत्रिका मे देशभक्ति से परिपूर्ण लेख आदि प्रकाशित होने लगे तो इसे बन्द करा दिया गया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 1 जनवरी, 1874 को बाला-बोधिनी पत्रिका निकालनी शुरू की। बालाबोधिनी पत्रिका महिलाओं की मासिक पत्रिका थी।

बालाबोधिनी :

1 जनवरी 1874 को भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने बालाबोधिनी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। यह हिन्दी मासिक पत्रिका बनारस से प्रकाशित होती थी। यह महिलाओं से संबंधित थी। इसके संदर्भ मे रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि "संवत् 1931 मे भारतेन्दु जी ने स्त्री शिक्षा के लिए 'बालाबोधिनी' निकाली थी।

हिन्दी पत्रकारिता का महत्व

भारतेन्दु के समय देश में नवीन राजनीतिक, सामाजिक चेतना का उदय प्रारम्भ हो गया था। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों तथा लेखों पर जन सामान्य अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगा तथा उनमें व्यक्त विचारों से उद्वेलित भी होने लगा। भारतेन्दु के बारे में हिन्दी साहित्य कोश में लिखा है - भारतेन्दु हरिश्चंद्र नवयुग के जन्मदाता हैं। उनकी रचनाएँ देशप्रेम से ओतप्रोत हैं उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की सर्वतोमुखी अधोगति का हृदयविदारक चित्र अंकित किया और उसके भावी उज्जवल भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न देखा।

भारतेन्दु और अन्य पत्रकारों ने सम्पूर्ण भारतवर्ष की सांस्कृतिक, एकता को पहचानते हुए सांस्कृतिक पुनरुत्थान को पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। इस कारण तत्कालीन पत्रकारों ने साहित्यकार, संपादक, विचारक, समाज सुधारक और क्रांतिकारी आदि बहुमुखी दायित्वों का निर्वहन किया। सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जगाने के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के विरोध की दोहरी भूमिका उन्होंने अत्यंत कुशलता से निभाई।

Kolkata

भारतेन्दु युग का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका कविवचन सुधा से होता है। इसके माध्यम से हिन्दी भाषा के परिष्कार और खड़ी बोली गद्य को व्यवस्थित रूप देने के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना का भी व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार हुआ। उन्होंने स्वदेशी के प्रचार और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध करने के लिए अपनी पत्रकारिता

को माध्यम बनाया और स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए भारतीयों का आह्वान किया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी अपनाने पर जोर, शैक्षिक विकास, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, आधुनिक प्रगति से अवगत कराना, खादी के प्रचार प्रसार आदि विषयों को इसमें महत्त्व दिया जाता था।

इसमें साहित्य के साथ-साथ सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों व नवजागरण से संबंधित सामग्री भी प्रकाशित होती थी। इसमें ब्रिटिश का हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान है।

भारतेन्दु की राष्ट्रीय चेतना की भावना और उत्कृष्ट पत्रकारीय कौशल से प्रभावित होकर अनेक पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हुए, जिनमें 'हिन्दी प्रदीप' (1877) 'भारत मित्र' (1878), 'सारसुधानिधि' (1879), 'केसरी' (1881), 'ब्राह्मण' (1883), हिंदोस्तान (1855) आदि प्रमुख थे। इनके माध्यम से भारतीय जनमानस को जाग्रत करके स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया गया। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के बावजूद इस संकटकाल में भी भारतेन्दु युग के पत्रकारों ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करने की इस कठिन चुनौती को स्वीकार किया।

भारतेन्दु मंडल के एक वरिष्ठ सदस्य बालकृष्ण भट्ट के संपादन में 1877 में हिन्दी प्रदीप नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसका हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह उस युग की सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका थी। इसके द्वारा हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार सार्थक किया गया। साहित्य के साथ साथ इसकी सामग्री राष्ट्रीय चेतना

से भी ओतप्रोत होती थी। तत्कालीन, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परिस्थितियों का सटीक चित्रण करते हुए जनजागरण के आन्दोलनों में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी प्रबल इच्छाशक्ति, दृढ़-संकल्प और उच्च आदर्शों के कारण अनेक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी यह पत्रिका निरंतर 35 वर्ष तक प्रकाशित होती रही जो इसकी एक विशेष उपलब्धि है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर ही सर्वोपरि था। साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से जनमानस को एक नवीन दृष्टि प्रदान करने और नवजागरण लाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस युग में राष्ट्रीयता की भावना के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया गया है जिसे परवर्ती पत्रकारों ने आगे बढ़ाया। सामाजिक व राजनीतिक सुधार के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी इन पत्रकारों की सराहनीय भूमिका रही। राष्ट्रीय चेतना के इस युग में पत्रकारों का उद्देश्य किसी भी प्रकार की व्यावसायिक पत्रकारिता को प्रश्रय देना नहीं था लेकिन पत्रकारिता का सही दिशा में सदुपयोग करते हुए जनमानस में वह जोश एवं उमंग भरना था जिससे आम ब्रिटिश शासन के खिलाफ वह स्वयं खड़े होने का साहस कर सकें।

Kolkata

भारतेन्दुयुगीन पत्रिकाओं का हिन्दी साहित्य में अवदान

इन पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य जन-जन पहुँचाया इन पत्रिकाओं में उपन्यास निकलते थे। तथा साप्ताहिक अंश के रूप में निकलते थे। भारतेन्दु युग की सीमा प्रदान की गई है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है।

नवजागरण काल – भारतेन्दु काल को नवजागरण काल के संक्रांति काल के दो पक्ष हैं। इस समय के दरम्यान एक ओर प्राचीन परिपाटी में काव्य रचना होती रही और दूसरी ओर सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में जो सक्रियता बढ़ रही थी और परिस्थितियों के कारण बदलाव के कारण लिए नए विचारों का प्रसार हो रहा था उनका भी धीरे-धीरे साहित्य में काव्य के विषय चयन में व्यापकता और विविधता आई। श्रृंगारिकता, रीतिबद्धता में कमी आई। राष्ट्र प्रेम, भाषा प्रेम, और स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम कवियों के मन में भी पैदा होने लगा।

उनका ध्यान सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान की ओर भी गया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में गतिशीलता नवजागरण को अपनी रचनाओं के द्वारा प्रोत्साहित किया।

सन् 1868 के बाद नवजागरण के लक्षण अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे। विद्वानों ने इस परिवर्तन का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। इसलिए इस युग को 'भारतेन्दु युग' भी कहा जाता है। भारतेन्दु और उनकी पत्रिकाओं का हिन्दी साहित्य में बहुत बड़ा महत्व रहा।

भारतेन्दु ने न केवल नई विधाओं का सृजन किया बल्कि वे साहित्य की विषय-वस्तु में भी बदलाव लेकर आए इसलिए उन्हें आधुनिक में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। उनसे पहले हिन्दी साहित्य में मध्यकाल की प्रवृत्तियां मौजूद थीं, इसलिए उनसे पहले का साहित्य दुनियावी जरूरतों से बिलकुल कटा हुआ था। साहित्य का मुख्य आधार प्रेम, भक्ति और अध्यात्म का था। इसे अपने प्रयासों से उन्होंने बदल डाला। उन्होंने हिन्दी साहित्य को देश की सामाजिक संस्कृति की खूबियों के साथ-साथ पश्चिम की भौतिक और वैज्ञानिक सोच से लैस करने की भरसक कोशिश की।

आलोचकों के अनुसार भारतेन्दु का दूसरा सबसे बड़ा योगदान हिन्दी भाषा को नई धारा में ढालने का माना जाता है। उनसे पहले हिन्दी भाषा में दो तरह के 'स्कूल' चलते थे। एक राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी और दूसरा राजा शिव प्रसाद 'सितारेहिंद' की फारसीनिष्ठ शैली का। दोनों ही शैलियों अपनी अति को छू रही थी एक हिन्दी भाषा में संस्कृत के शब्दों को चुन-चुनकर डाल रही थी तो दूसरा फारसी के शब्दों को।

निष्कर्ष

भारतेन्दु युग की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है प्राचीन और नवीन का समन्वय। भारतेन्दुयुगीन साहित्यकार कविता ब्रजभाषा और गद्य में खड़ी बोली के पक्षपाती थे। ब्रज भाषा में वे एक साथ भक्ति और शृंगार की कविता लिखकर प्राचीन कवियों की कोटि में पहुंचते हैं और नवीन युग की देशभक्ति तथा समाज सुधार की कविताएँ लिखकर नयी कवियों का नेतृत्व करते हैं। इस युग में कवि समाचार पत्रों द्वारा अपनी कविता का प्रचार करते थे, इसलिए उन्हें इसे काव्यपूर्ण बनाने की चिंता नहीं थी।

Kolkata

कहने का मतलब यह है कि इस युग के कवि तात्कालिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवम् भाषा संबंधी समस्याओं में इतने व्यस्त थे कि वे नवयुग की चेतना को कलात्मक एवम् प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति न कर सके और उसमें केवल यथार्थ की अनुभूति की सच्चाई सफल भाषा-शैली में अभिव्यक्ति हुई। जैसे —

"खंडन-मंडन की बातें सब करते सुनी सुनाई।
गाली देकर हाय बनाते बैरी अपने भाई॥
है उपासना भेद न उसके अर्थ और विस्तार"

ग्रन्थसूची

मैं सर्वप्रथम अपनी अध्यापकों का सहृदय धन्यवाद देना चाहती हूँ। जिन्होंने मेरी इस परियोजना को पूरा करने मे सहायता कि। इस परियोजना को पूरा करने मे मेरे माता-पिता ने भी कुछ जानकारियाँ मेरे उपलब्ध किया। मैं अपनी मित्रो का भी हार्दिक अभिनंदन करती हूँ। इसके अलावा मैंने कुछ पुस्तकें पढ़ी जैसे

- हिन्दी पत्रकारिता
- भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता

पुस्तकों के अलावा मैंने इंटरनेट से भी सहायता ली उन साइटस जिन्होंने मेरी मदद करी है, का नाम कुछ ऐसे है :—

- विकिपीडिया वेब साइट
- ब्राइन्ट्स वेब साइट
- कुओरा वेब साइट

आखिर मे मैं उन सभी लोगो का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मेरी परियोजना बनाने मे मदद की है।

14/15

K.Kam 8-7-22

GOKHALE MEMORIAL GIRLS' COLLEGE

ESTD 1938

SESSION : 2021-2022

NAME – SWEETY PRASAD

UNIVERSITY ROLL NO. - 192013-11-0081

UNIVERSITY REG. NO. - 013-1211-0095-19

COLLEGE ROLL NO -19/BAH/0155

SEMERSTER – 6TH

विषय:

- *CC13 – समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता*
- *CC14 – हिंदी का प्रयोग क्षेत्र*
- *DSE (B1) - तुलसीदास "रामचरितमानस"*
- *DSE (B2) - प्रेमचंद "पूस की रात"*

Kolkata

Authenticated.

Principal
Gokhale Memorial Girls' College

SEMERSTER - 6TH

विषय :

समकालीन

साहित्यिक

पत्रकारिता

समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता

अनुक्रमणा+ समकालीन पत्रकारिता का इतिहास काफी पुराना है, किसी भी देश की सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को जानने के लिए उस देश की पत्रिकाओं और समाचार पत्रों की भूमिका को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। चूंकि साहित्य और पत्रकारिता दोनों एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुये हैं, यही कारण है कि जब भी आवश्यकता पड़ी साहित्यकारों ने हिन्दी पत्रकारिता को सामाजिक और राजनैतिक उद्देश्य के तहत अपनाया। हिन्दी में साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत भी इसी तथ्य को सामने रखकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त आदि ने किया और बाद में चलकर आचार्य महावीर प्रसाद और प्रेमचन्द ने उसका विकास किया। उल्लेखनीय है कि साहित्यिक पत्रकारिता की परम्परा भारतेन्दु युग से प्रारम्भ होती है भारतेन्दु के सम्पादन में प्रकाशित होते तो 25 पत्रिकाओं का उल्लेख मिलता है। जिसमें खास तौर पर कवि वचन सुधा (1867-68), हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873-74) और हरिश्चन्द्र पत्रिका (1871) की चर्चा की जाती है। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन के पीछे सम्पादक का उद्देश्य पाठकों को राजनीतिक विचारों की जानकारी देना था।

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का इतिहास + हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता हिन्दी साहित्य के विकास का अभिन्न अंग है। दोनों परस्पर एक-दूसरे का इतिहास है। इस दृष्टि से दोनों में द्वन्द्वात्मक और अन्योन्याश्रित सम्बन्ध सहज ही लक्षित की जा सकती है। वस्तुतः हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता हमारे आधुनिक साहित्यिक इतिहास का अत्यंत गौरवशाली स्वर्ण नाम पृष्ठ है। स्मरणीय है कि हिन्दी के गद्य साहित्य और नवीन एवं मौलिक गद्य-विधाओं का उदय ही हिन्दी पत्रकारिता की सर्जनात्मक कोख से हुआ था।

यह पत्रकारिता ही आरम्भ कालीन हिन्दी समाचार पत्रों के पृष्ठों पर धीरे-धीरे उभरते आती अर्ध-साहित्यिक पत्रकारिता से क्रमशः विकसित होते हुए, भारतेन्दु युग में साहित्यिक पत्रकारिता के रूप में प्रस्फुटित हुई थी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सन् 1850-1885 ई०) की पत्रिकाओं कवि वचन सुधा (1867 ई०), ~~हरि~~ हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873) और हरिश्चन्द्र चंद्रिका (1874) ई० से ही हमें वास्तविक अर्थों में हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के दर्शन होते हैं। हिन्दी की आरम्भ कालीन साहित्यिक पत्रकारिता से ही हिन्दी गद्य का चलता हुआ रूप निखर कर सामने आया और भारतेन्दु युग से गद्य-विधाओं और गद्य साहित्य की अखंड परम्परा का आविर्भाव हुआ।

साहित्यिक पत्रिका - साहित्य में आधुनिक चेतना, स्वच्छंद आत्माभिव्यक्ति और व्यक्तिगत पाठक समुदाय के विकास के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता का उदय हुआ था। शायद ही नहीं, कुछ अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में, हिन्दी में कतिपय विलंब से यहाँ तक कि अपनी सहोदर उर्दू की तुलना में भी कुछ विलंब से इसका कारण यह था कि अन्य भारतीय भाषाओं और उर्दू की तुलना में हिन्दी में गद्य का विकास देर से हुआ था। भारतेन्दु युग से पहले तक कविता की भाषा ब्रजभाषा और गद्य की भाषा खड़ी बोली हिन्दी के इस प्रचलित विभाजन से भी हिन्दी गद्य के स्वाभाविक विकास में बाधा ~~क~~ नजर आती है। लेकिन एक बार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गति पकड़ लेने के बाद, हिन्दी गद्य और प्रकारांतर से हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता ने अभी हिन्दी की अतिरिक्त दुनिया की किसी भी ~~क~~ भाषा में और न ही अभी भी ऐसा विभाजन नहीं था ~~नहीं था। और क~~ है। इसी से ~~ऐसा विभाजन~~ अस्वाभाविक सोच अपने तीव्र विकास की ~~र~~ दौड़ने को उत्तरोत्तर प्रगति में सबको पीछे छोड़ दिया और वह इस हिन्दी पथ पर अग्रसित हो गई। शीघ्र ही हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को आधुनिक साहित्य के सविकासात्मक विकास में प्रेरक भूमिका निभाते हुए देखते हैं।

भारतेन्दु युग की अवधि - साहित्यिक पत्र - पत्रिकाओं से उभरने वाली रचनाओं ने रचनों के प्रति लोगों में मनोरंजन और उत्सुकता के साथ ही

साहित्यिक स्वभाव वाली रचनाओं में भी रुचि पैदा करने में बड़ी भूमिका निभाती थी। भारतेन्दु युग की श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रकारिता ने लोगों की रुचि पढ़ने की ओर आकर्षित करते हुए उन्हें हिन्दी साहित्य के जागरूक पाठक बनाया, लोगों में गंभीर साहित्य पढ़ने की आदत डाली, उन्हें टीका-टिप्पणी करने की ओर प्रेरित करके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप में जागरूक बनाया।

<u>समकालीन साहित्यिक रचनाओं का मूल्यांकन</u> :- स्पष्ट है कि साहित्यिक पत्रकारिता, रुचि का यह परिष्कार कृतियों, रचनाओं और रचनाकारों के मूल्यांकन के माध्यम से ही करती है। इस प्रकार साहित्यिक पत्रकारिता रचनाओं का स्तर निर्धारित करते हुए, अच्छी और श्रेष्ठ रचनाओं को ~~एक~~ सतही बाजारू रचनाओं की भारी-भरकम भीड़ से अलगाती है। वास्तव में यह छंटाई द्वारा भीड़ रचना के बाद साहित्य का सही इतिहास बनता है। शोपेन हॉवर ने साहित्यिक पत्रकारिता की इस अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए लिखा है कि साहित्यिक पत्रों का दायित्व है कि वे युग की पुस्तकीय और निरर्थक रचनाओं की बाढ़ के विरुद्ध मज़बूत बाँध का काम करें।

10/15

K.Kanu
8.7.23

Kolkata

SESSION : 2021-2022

NAME – PRITI KUMARI JHA

UNIVERSITY ROLL NO. - 192013-11-0082

UNIVERSITY REG. NO. - 013-1211-0102-19

COLLEGE ROLL NO -19/BAH/0020

SEMESTER – 6TH

Kolkata

विषय:

- *CC13 – द्विवेदी युगीन पत्रकारिता*
- *CC14 – मातृभाषा और संपर्क भाषा*
- *DSE (B1) - तुलसीदास "रामचरितमानस"*
- *DSE (B2) - प्रेमचंद "बड़े घर की बेटी"*

Authenticated.
Principal
Gokhale Memorial Girls' College

विषय :-

द्विवेदीयुगीन पत्रकारिता

Kolkata

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	द्विवेदीयुगीन पत्रकारिता	3-4.
2.	द्विवेदीयुगीन पत्र-पत्रिकाएँ	5-6.
3.	द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं का महत्व	7-8.
4.	निष्कर्ष	9.
5.	ग्रंथसूची	10.

Kolkata

द्विवेदी युगीन पत्रिका की भूमिका :-

द्विवेदी युग हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग के बाद का समय है। इस युग का नाम महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से रखा गया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी एक ऐसे साहित्यकार थे, जो बहुभाषी होने के साथ ही साहित्य के इतर विषयों में भी समान रुचि रखते थे। उन्होंने सरस्वती का अठारह वर्षों तक संपादन कर हिंदी पत्रकारिता में एक महान कीर्तिमान स्थापित किया था।

20वीं सदी का आरंभ अनेक देशी एवं विदेशी घटनाओं से होता है। इस देश की घटनाओं में कांग्रेस का बढ़ता प्रभाव, स्वदेशी आंदोलन का आरंभ, मुस्लिम लीग का जन्म, लॉर्ड कर्जन की त्रुटि पुन: नीतियाँ तथा विदेशी घटनाओं को 1908 में जापान द्वारा रूसियों की पराजय आदि घटनाओं ने भारतीयों को झकझोर दिया। इस देश की बौद्धिक वर्ग ने स्वतंत्रता प्राप्ति एवं समाज सुधार के लिए पत्रकारिता का आश्रय लिया। अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना आत्मविश्वास और देश के लिए बलिदान का भाव जागा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा विज्ञान, व्याकरण, साहित्य सिद्धांत, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र जैसे विषयों पर लिखवाया और स्वयं भी लिखा। सरस्वती

के माध्यम से द्विवेदी जी (भाषा के
शिल्पी, विचारों के प्रचारक और साहित्य के
शिक्षक)- इन तीनों भूमिकाओं का उन्होंने निर्वाह
किया। सरस्वती की लोकप्रियता का एक कारण
हिंदी नवजागरण की शक्ति थी। डॉ० रामविलास
शर्मा लिखते हैं, अपनी पुस्तक में "महावीर
प्रसाद द्विवेदी जी कि युगांतकारी भूमिका यह थी
कि उन्होंने बिखरी हुई शक्ति को एक पत्रिका के
माध्यम से एकताबद्ध किया।"

द्विवेदी युग में देशभक्ति को व्यापक
आधार मिला। इस काल में देशभक्ति विषयक
लघु एवं दीर्घ कविताएँ लिखी गई। इस युग के
कवियों ने प्रकृति के अत्यंत रमणीय चित्र खींचे
हैं। प्रकृति का स्वतंत्र रूप से मनोहारी चित्रण
मिलता है। द्विवेदी युग में सामाजिक और धार्मिक
क्षेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन आ रहा था। तत्कालीन
नेताओं ने इन सब कुरीतियों को समूल नष्ट
करने के लिए कार्य किए। रेल, तार, मुद्रण के
प्रचार और समुद्र यात्रा, शिक्षा का प्रचार आदि
द्वारा सामाजिक रूढ़ियाँ टूटने लगीं।

द्विवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाएँ:-

सरस्वती पत्रिका — सरस्वती हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध रूपगुणसम्पन्न प्रतिनिधि पत्रिका थी। इस पत्रिका का प्रकाशन इंडियन प्रेस, प्रयाग से सन 1900 ई. के जनवरी मास में प्रारम्भ हुआ था। 32 पृष्ठ की काउन आकार की इस पत्रिका का मूल्य 4 आना मात्र था। 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक हुए और 1920 ई. तक रहे। इसका प्रकाशन पहले झाँसी और फिर कानपुर से होने लगा था। श्यामसुन्दर दास के बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनके पश्चात पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, देवी दत्त शुक्ल, श्रीनाथ सिंह और श्रीनाथ, श्रीनारायण चतुर्वेदी सम्पादक हुए। 1905 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का नाम मुखपृष्ठ से हट गया। 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसका कार्यभार संभाला।

कर्मवीर पत्रिका — कर्मवीर एक हिंदी पत्रिका थी। पत्रकारिता के पितृ पुरुष माधवराव सप्रे की प्रेरणा से इसका प्रथम प्रकाशन जबलपुर से हुआ। इसके प्रथम सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी थे। 17 जनवरी 1920 को नवम्बर 1922 तक यह जबलपुर से निकलती थी किंतु बाद में खण्डवा से प्रकाशित हुई।

Kolkata

प्रताप पत्रिका — प्रताप हिंदी का समाचार पत्र था जिसने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभायी। प्रताप के जरिये जहां न जाने कितने क्रांतिकारी स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ हुए, वहीं समय-समय पर यह अखबार क्रांतिकारी हेतु सुरक्षा की ढाल भी बना। इसे गणेश शंकर विद्यार्थी ने सन १९२३ से कानपुर से निकालना आरंभ किया।

पराग पत्रिका — पराग एक हिंदी बाल पत्रिका है जो प्रति महिने प्रकाशित होती है। अपने प्रकाशन के दौरान 'नन्हे मुन्नों के लिए' शीर्षक के अंतर्गत इस वर्ग के बच्चों का साहित्य प्रकाशित किया करती थी जिसे पाठकों से अपने नन्हे भाई-बहनों को सुनाने का आग्रह भी होता था।

नंदन पत्रिका — नंदन बच्चों की एक हिंदी मासिक पत्रिका है। नंदन हिंदुस्तान टाइम्स मीडिया की मासिक बच्चों की पत्रिका है जो 57 साल से अधिक पुरानी है। पत्रिका को नवम्बर 1964 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने प्रारम्भ किया गया था। नंदन पत्रिका की 10,000 से भी ज्यादा कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

Kolkata

द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं का महत्व :-

पत्र-पत्रिकाएँ कहो या समाचार पत्र दोनो ही एक ही बात है। यह हमारे रोज की दिनचर्या के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है प्रात: काल से हर किसी को पत्र पत्रिकाओं का इंतजार रहता है या यूं कहे कि उनकी दिनचर्या ही पत्र-पत्रिकाओं से शुरू होती है। हमारे आस-पास व देश विदेश की घटनाओं की जानकारी हमें पत्र-पत्रिकाओं से ही प्राप्त होती है हमें हर तरह की जानकारी इससे मिलती है जैसे कि शिक्षा, मनोरंजन, साहित्य आदि की प्रमुख खबर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। ये हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग सा बन गया है। सबसे पहले पत्र पत्रिका, वॉइसराय हिक्की द्वारा "बंगाल गजट" नाम से बंगाल में शुरू किया गया था लेकिन यह केवल अंग्रेजों के उपयोग मात्र था। इसलिए हिंदी पत्र पत्रिका सन 1826 में "उदन्त मार्तण्ड" नाम से प्रकाशित हुआ था परंतु इसे आपन साप्ताहिक अखबार होने की वजह से बंद कर दिया गया था फिर हमारे देश के लोगों ने अंग्रेजो के विरुद्ध जाकर कई पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया जैसे बाँग्ला दूत, केसरी, वंदे मातरम आदि।

पत्र-पत्रिकाएँ आज की न केवल हमारे जीवन की आवश्यकता है बल्कि हमारे जीवन में कई अच्छे बदलाव लाता है हमारे जीवन पर एक अच्छी छाप भी छोड़ता है इसके केवल लाभ ही है, कुछ लोग इसका गलत लाभ उठाते

है, वह उनके जीवन में नुकसान का आधार बनते हैं जिसे प्रकार अगर हमारी आँख बंद कर दी जाए और पूछा जाए कि हमारे समाज हमारी दुनिया में क्या चल रहा है तो हम कुछ नहीं बता पाएँगे एक अंधे व्यक्ति के समान कुछ अनजान से रहेंगे और कुछ नहीं बता पाएँगे उसी प्रकार पत्र-पत्रिकाएँ हमारी आँखें खोलती है और कहती है कि देखो तुम्हारे आसपास और दुनिया में क्या चल रहा है।

लोकतंत्र में समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं का काफी महत्व होता है। समाचार पत्र लोकमत को व्यक्त करने का सबसे सशक्त साधन है। जब रेडियो तथा टेलीविज़न का ज्यादा जोर नहीं था, समाचार-पत्रों में छपे समाचार पढ़कर ही लोग देश-विदेश में घटित घटनाओं की जानकारी प्राप्त किया करते थे।

Kolkata

निष्कर्ष

भारतेंदु युग में राज भक्ति और देश भक्ति
के साथ समाज सुधार के लेख, स्तंभ छपते थे।
इसकी भाषा खड़ी बोली होती थी। इस युग
की राष्ट्रीयता संप्रदायिकता और प्रांतीयता से
ऊपर अति उदार और व्यापक राष्ट्रीयता है। मातृभूमि
के लिए सर्वस्व बलिदान स्वार्थ त्याग तथा
पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने की अमूर्त प्रेरणा
देकर इन पत्रकारिताओं ने राष्ट्रीय भावना को
विकसित किया तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन को
बल प्रदान किया। जहाँ उन्होंने सामाजिक कुरीतियों
धार्मिक आडंबर औ तथा निरर्थक रूढ़ियों पर
जोरदार प्रहार किए वहाँ अपनी परंपरा के उपयोगी
तत्वों का सबल समर्थन और पोषण भी किया
इस युग की रचनाओं का सांस्कृतिक पक्ष अत्यंत
सबल है उसी में इसकी शक्ति निहित है।

Kolkata

ग्रंथसूची

इस परियोजना को पूरा करने के लिए मैंने इंटरनेट की सहायता ली है—

∴ www.wikipedia.com

∴ www Hinkhoj.com

∴ www Bharat discover.org

12/15

K.Kaur
8.7.22

Kolkata